दीपिका कुमारी

अपने गांव में बचपन में आम के पेड़ों को पत्थर मारते वक्त उनका निशाना कभी नहीं चुका उन्हें क्या पता था एक दिन उनका यही हुनर इस देश को गोल्ड मेडल जीता देगा।

दीपिका कुमारी के पिता ऑटो ड्राइवर है और मां एक नर्स, जिनकी आमदनी से घर चलता है। घर की परिस्थिति को देखकर दीपिका ने ठान लिया की इन हालातों से परिवार को निकालना जरूरी है। दीपिका को तीरंदाजी में शौक तो था ही लेकिन इस संस्था में एडमिशन मिलना और इसकी फीस भरने के लिए काफी दिक्कतें होने वाली थी। इसलिए उनका ज्यादातर अभ्यास घर में ही निकलता। दीपिका ने घर के बने बांस के धनुष और तीर का उपयोग करके तीरंदाजी का अभ्यास किया। दीपिका की चचेरी बहन विद्या कुमारी, टाटा तीरंदाजी अकादमी से जुडी थी। उन्होंने दीपिका कुमारी को तीरंदाज़ी सीखने में मदद की।

2016 में दीपिका कुमारी का सिलेक्शन ओलंपिक गेम्स के लिए किया गया। उन्होंने तीरंदाज़ी में कई अवाड्र्स हासिल किए।

2012 में भारत सरकार ने उन्हें अर्जुन अवार्ड से सम्मानित किया। 2014 में वह स्पोर्ट्स पर्सन ऑफ द ईयर चुनी गई और 2016 में केंद्र सरकार ने पद्मश्री अवार्ड से सम्मानित किया। पद्मश्री अवार्ड मिलने के बावजूद दीपिका कुमारी कहती है कि अभी उनकी राह बहुत बाकी है। बहुत कुछ जीतना है और बहुत कुछ सीखना है।

दीपिका कुमारी के हौसले को हम सलाम करते हैं।